द्रव्य के प्रकार :— द्रव्य के नौ प्रकार होते है—
(1.) पृथ्वी (2.) जल (3.) अग्नि (4.) वायु (5.) आकाश (6.) काल
(7.) दिक् (8.) आत्मा तथा (9.) मन ।

Scanned with CamScanner

(1.) पृथ्वी :— महर्षि कणाद ने पृथ्वी को रूप, रस, स्पर्श और गंध इन चारों गुणों से युक्त माना है, किन्तु विशेष रूप से पृथ्वी का गुण गंध है। गंध ही ऐसा गुण है जो पृथ्वी को अन्य द्रव्यों से अलग करता है। जल, वायु आदि में जो गंध का अनुभव होता है वह इस कारण से होता है कि उनमें कुछ-न-कुछ अंश पृथ्वी का ही सम्मिलित रहता है। इसी कारण से गँदला पानी महकता है, स्वच्छ जल नहीं।

(2.) जल :— रूप, रस, और स्पर्श ये जल के गुण है। परन्तु इनमें जल का विशेष गुण रस होता है। इसका स्वाभाविक रूप-गुण शीतलता है। परन्तु इसके विपरीत यदि जल का स्वाभाविक गुण है तो उसमें अन्य भूतों के गुण अवश्य मिले हुए हैं। जैसे- यदि जल गर्म है तो इसका अर्थ ये हुआ कि उसमें तेज का गुण आ गया है।

(3.) अग्नि :— अग्नि में रूप और स्पर्श का गुण होता है। परन्तु विशेष गुण रूप होता है। अग्नि का रूप शुक्ल और स्पर्श उष्ण होता है।

(4.) वायु :— वायु में केवल स्पर्श गुण होते है। इसलिए इसका अनुमान केवल स्पर्श के द्वारा होता है। अन्य तीन भूतों के समान इसका प्रत्यक्ष नहीं होता।

(5.) आकाश :— आकाश का गुण 'शब्द' होता है। आकाश नित्य, विभु एवं सर्वव्यापक है। इसका प्रत्यक्ष संभव नहीं है, किन्तु अनुमान के द्वारा इसके अस्तित्व की सिद्धि होती है। अन्य सभी भूतों से इसकी विशेषता यह है कि यह अविनाश्य है। अन्य भूत तो परमाणु रूप में रहते है, परन्तु यह परमाणु रूप में नहीं रहता। अन्य भूत परमाणु रूप में नित्य तथा कार्य रूप में अनित्य होते हैं।

Scanned with CamScanner